स्नातक इतिहास

(बी०ए० पंचम सेमेस्टर)

BAHI(N)-D-304

शोध प्रबंध कार्य

(Research Dissertation)

BAHI(N)-D-304

शोध प्रबंध कार्य की रुपरेखा एवं शोध प्रबंध कार्य हेतु दिशा निर्देश

(Guidelines for Synopsis and Dissertation)

(बी. ए.-V सेमेस्टर)(Course Code: **BAHI (N)-D-304**

अध्ययन मंडल

अध्यक्ष संयोजक

कुलपति निदेशक समाज विज्ञान विद्याशाखा

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

पाठ्यक्रम लेखन एवं संपादन : प्रोफ़ेसर गिरिजा प्रसाद पाण्डे

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ,हल्द्वानी

प्रकाशन वर्ष : 2025

Published by: उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय,हल्द्वानी (नैनीताल)-263139

…………………………………………………………………

सर्वाधिकार सुरक्षित | इस प्रकाशन का कोई भी अंश उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है |

शिक्षार्थियों हेतु दिशानिर्देश

(Guidelines for Learners)

- बी॰ ए॰ पंचम सेमेस्टर में शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध प्रस्ताव (Dissertation Proposal)एवं शोध प्रबन्ध कार्य (Dissertation) करने हेतु विश्वविद्यालय के इतिहास विषय के प्राध्यापक से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा। अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे इतिहास के शैक्षिक परामर्शदाता से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- सर्वप्रथम शिक्षार्थियों को एक शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर विश्वविद्यालय को निम्नलिखित मेल आईडी॰ पर प्रेषित करना होगा doh@uou.ac.in
- विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्ताव का अवलोकन कर आवश्यक दिशानिर्देश एवं सुझाव, शोध प्रबन्ध प्रस्ताव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय को प्रेषित करने की अंतिम तिथि के एक सप्ताह पश्चात विश्वविद्यालय की वेब साईट पर अपलोड कर दिए जाएँगे |
- जिन शिक्षार्थियों का शोध प्रबन्ध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया जायेगा ,उन विद्यार्थियों को अपना शोध प्रबन्ध प्रस्ताव आवश्यक सुधार के साथ एक सप्ताह के भीतर पुनः विश्वविद्यालय (only soft copy) को प्रेषित करना होगा |
- कोई भी डिज़र्टेशन प्रस्ताव, जो विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो उसका डिज़र्टेशन, डिज़र्टेशन प्रस्ताव की स्वीकृति के बिना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा |
- विश्वविद्यालय द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्ताव की स्वीकृत की पुष्टि हो जाने पर ही अपना शोध कार्य प्रारंभ करें |

➢ शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध प्रस्ताव के साथ अपने पर्यवेक्षक (Facilitator) का एक बायो-डेटा अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा, इसके बिना किसी भी विद्यार्थी का शोध प्रारूप विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किया जायेगा |

➢ विश्वविद्यालय को भेजा गया शोध प्रबन्ध विद्यार्थियों को वापस नहीं किया जायेगा।

➢ शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध अध्ययन स्वंय करें। नकल किया गया कार्य स्वीकार नहीं किया जायेगा।

➢ यदि विश्वविद्यालय द्वारा किन्हीं दो शिक्षार्थियों के शोध प्रबन्ध का विषय एवं क्षेत्र समान पाया गया अथवा अनुवाद करके दूसरे विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया तो उनका शोध प्रबन्ध निरस्त कर दिया जायेगा।

➢ डिज़र्टेशन कार्य में मार्गदर्शन हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

➢ शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने शोध प्रबन्ध प्रस्ताव एवं शोध प्रबन्ध कार्य की दो प्रतियाँ तैयार करें जिसमें से एक विश्वविद्यालय हेतु एवं दूसरी विद्यार्थियों के स्वयं के उपयोग के लिए होगी।

➢ आपका डिज़र्टेशन कार्य हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में डबल स्पेस, फॉन्ट साईज-14 में ए- फोर पेपर- साईज़ में होना चाहिए।

➢ डिज़र्टेशन र्य टाईप होने के पश्चात आपके द्वारा पुनः टाइपिंग अशुद्धियों को देखकर उनको शुद्ध करा लिया जाए। शोध प्रबन्ध कार्य में पृष्ठ संख्या अवश्य अंकित करें |

➢ डिज़र्टेशन कार्य की बाइंडिंग हार्ड कवर पेज के साथ होनी चाहिए।

➢ डिज़र्टेशन के प्रथम पन्ने पर शिक्षार्थी का नाम,एनरोलमेंट न० व स्टडी सेंटर का पूरा पता आदि उल्लिखित होना चाहिए एवं पर्यवेक्षक (Facilitator) का पूरा नाम भी लिखा होना चाहिए।जिसका प्ररूप इस निर्देशिका के अंत में संलग्न है।

➢ डिज़र्टेशन कार्य के साथ शिक्षार्थियों को इस पुस्तिका के अन्तिम भाग में संलग्न तीन परफ़ोर्मा को भरकर संलग्न करना अत्यंत आवश्यक है।

➢ डिज़र्टेशन कार्य प्राथमिक तथ्यों /द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होना चाहिए |

आवश्यक तिथियाँ

- डिज़र्टेशन से सम्बंधित आवश्यक तिथियाँ विश्वविद्यालय की वेब साईट पर उपलब्ध होंगी |
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध प्रबंध प्रस्ताव उक्त मेल आईडी doh@uou.ac.in पर प्रेषित करें |

- नियत तिथि के पश्चात प्रेषित किये गए शोध प्रबंध कार्य किसी भी दशा में विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किये जाएँगे
- नियत तिथि के पश्चात भेजे गए शोध प्रबंध कार्य अगले सत्र में बैक पेपर परीक्षा के माध्यम से स्वीकार किये जाएँगे .

प्रस्तावना

(Introduction)

इतिहास के शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्होने इतिहास पाठ्यक्रम के अन्तर्गत जो ज्ञान प्राप्त किया है उसका उपयोग करके क्षेत्र-कार्यऔर ऐतिहासिक गवेषणाकी विधियों से भी अवगत हो सकें। हमारा मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी की इतिहास में दिलचस्पी पैदा करना है, इतिहास के अन्वेषण का अभ्यास कैसे किया जाता है, इसके संदर्भ में शिक्षार्थी की प्रवृत्ति को जागरूक करना है। विशेष रूप से हम शिक्षार्थियों से यह आशा करते हैं कि वे अपने स्थानीय इतिहास और निकटतम पड़ोस के अतीत की छानबीन कर उस जगह को भरने का प्रयास करें जो मुख्यधारा के ऐतिहासिक विमर्श में अक्सर अनदेखी रह जाती हैं, जबकि ये सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचनाओं, और सामूहिक स्मृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह मॉड्यूल स्नातक छात्रों को उनके आस-पास के स्थानों—चाहे वह मोहल्ला हो, गाँव हो, कस्बा हो, या शहरी क्षेत्र—के इतिहासों का अन्वेषण और दस्तावेज़ीकरण करने के लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही यह डिज़र्टेशन कार्य भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर भी रोचक कार्य करने की आशा करता है। ऐतिहासिक चरित्रों, ऐतिहासिक शिल्प-परंपराओं, वास्तु-स्थापत्यों, लेखन-शैलियों, लैंगिक भूमिकाओं, पर्यावरण सम्बन्धी रीतियों तथा पारम्परिक तकनीकों के सम्बंध में डिज़र्टेशन कार्य करने को हम प्राथमिकता दिए जाने की आशा करते हैं। यह छात्रों को बड़े और छोटे स्तरों पर इतिहास की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है, साथ ही जीवंत अनुभवों को ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में महत्व देने की प्रेरणा देता है। पारंपरिक "ऊपर से नीचे" के दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए, यह "नीचे से ऊपर" की विधियों को अपनाने पर जोर देता है, जो कि हाशिए पर पड़े समुदायों, अनलिखी रह गई घटनाओं और दैनिक जीवन को प्राथमिकता देती हैं।यह कार्य अनुसंधान के अभिनव तरीकों, अंतर्विषयक दृष्टिकोणों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से छात्रों में आलोचनात्मक सोच, कौशल और इतिहास के प्रति एक समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने का लक्ष्य रखता है।

अतः इतिहास के शिक्षार्थियों में शोध दक्षता उत्पन्न करने हेतु उन्हें शोध कार्य करना एक आवश्यक क्रियाकलाप है। जिसमें एक शीर्षक का चुनाव कर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना होता है। शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए सर्वप्रथम एक शोध प्रबंध प्रस्ताव (Dissertation Proposal) का निर्माण करना होता है। आपका शोध प्रबंध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार कर लिये जाने के पश्चात शोध प्रबन्ध कार्य को पूर्ण करना होगा।शोध प्रबन्ध प्रस्ताव एंव शोध प्रबन्ध कार्य सम्पन्न करने हेतु आपको उचित मार्गदर्शन की अवश्यकता होगी। डिज़र्टेशन-प्रस्ताव एंव डिज़र्टेशन करने हेतु अपने शैक्षिक परामर्शदाता (Academic Facilitator)) से सम्पर्क करें तथा उनसे शोध प्रबंध कार्य करने हेतु पर्यवेक्षक के चयन में सहयोग मागें। यही सहयोगी जो आपको डिज़र्टेशन कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगें आपके फैसिलिटेटर कहलायेगें। आपके फैसिलिटेटर ही आपको शोध कार्य पूर्ण करने में सहायता प्रदान करेंगे, अतः अपने फैसिलिटेटर के सम्पर्क में रहें तथा उनके द्वारा दिये गये सुझावों से लाभान्वित हों।

प्रयोजन

(Purpose)

डिज़र्टेशन को इतिहास के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने का मर्म यह है कि शिक्षार्थियों को इतिहास की संकल्पनाओं एवं इसके विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया जा सके। जिससे आप इतिहास के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेगें। यहाँ पर आपकी सुविधा हेतु यह कहना प्रासंगिक होगा कि आप जिस विषय में भविष्य में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते है,उस विषय का चयन कर सकते हैं। इतिहास के अपनेपाठ्यक्रम में आप इतिहास के विभिन्न विषयों एवं क्षेत्रों से परिचित अवश्य हो गये होंगे,जो इतिहास की पृष्ठभूमि से सम्बन्धित है।आज के परिप्रेक्ष्य में आप इतिहास के वर्तमान में प्रासंगिक मुद्दों पर भी शोध कर सकते हैं।

उद्देश्य

(Objectives)

शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य

(Main Objectives of Dissertation)

1. स्थानीय तथा क्षेत्रीय इतिहासों के साथ जुड़ाव:
    - व्यापक ऐतिहासिक कथाओं-क़िस्सों में स्थानीय और पड़ोस के इतिहासों के महत्व को समझना।
    - विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों के ऐतिहासिक अनुभवों की विविधता की सराहना करना।
    - स्थानीय ऐतिहासिक विरासतों की जानकारी एकत्र करना।
    - भारतीय इतिहास के व्यापक अनुसंधान से स्थानीय या क्षेत्रीय इतिहास को जोड़ना।
    - पर्यावरण, परम्परागत तकनीकों तथा शिल्पों के ऐतिहासिक विकास को समझना।

2. अनुसंधान कौशल विकसित करना:
    - मौलिक स्रोतों जैसे मौखिक साक्ष्यों, अभिलेखीय दस्तावेज़ों, नक्शों, और दृश्य सामग्रियों के उपयोग में छात्रों को प्रशिक्षित करना।
    - ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए डिजिटल और गैर-डिजिटल उपकरणों की जानकारी और उसमें प्रवीणता हासिल करना।

3. आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना:

- स्मृति, सत्ता-सम्बंधों, और ऐतिहासिक कथाओं में पूर्वाग्रहकी भूमिका का विश्लेषण करना।
- यह समझना कि ऐतिहासिक निरूपण जटिल होता है, और यह कौन तय करता है और क्यों।

4. नवाचार को बढ़ावा देना:

- इतिहास प्रस्तुत करने के रचनात्मक तरीकों को प्रोत्साहित करना, जैसे कि डिजिटल कहानियाँ, प्रदर्शनियाँ, और मल्टीमीडिया डिज़र्टेशन।
- समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, और सांस्कृतिक अध्ययन के साथ अंतर्विषयक सम्बंध का पता लगाना।

5. शैक्षणिक और सामुदायिक क्षेत्र के बीच पुल का निर्माण:

- छात्रों, स्थानीय समुदायों, और ऐतिहासिक संगठनों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना ताकि सुलभ और अर्थपूर्ण ऐतिहासिक आख्यान रचे जा सकें।

शोध प्रबन्ध के विशेष उद्देश्य

(Special Objectives ofDissertation)

- शोध समस्या का निर्माण करना सीखना।
- गहन साहित्य सर्वेक्षण द्वारा शोध हेतु उपयुक्त विषय का चुनाव करना।
- परिकल्पना का निर्माण करने की प्रक्रिया से अवगत होना।
- शोध-प्रारुप निर्माण की प्रक्रिया को जानना।
- निदर्शन प्रारुप निर्धारण को समझाना।
- आँकड़ा संकलन की विधि से अवगत होना।
- प्रोजेक्ट का सम्पादन करना सीखना।
- आँकड़ों का विश्लेषण करने का ज्ञान अर्जित करना।

- परिकल्पनाओं का परीक्षण सीखना।
- सामान्यीकरण और विवेचन और
- रिपोर्ट तैयार करना या परिणामों का प्रस्तुतीकरण यानि निष्कर्षों का औपचारिक लेखन लिखने की कला को सीखना।

डिज़र्टेशन कार्य से आशय

डिज़र्टेशन एक अप्रत्यक्ष/परोक्ष रूप में, एवं सक्रिय कार्य करने की एक विधि है।जो संगठित रूप से एक विषय के बारे में क्रमबद्ध,विस्तृत एवं नयी जानकारी प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करती है।इतिहास में डिज़र्टेशन कार्य अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक-आधारित अध्ययन के पारंपरिक तरीकों से परे जाकर विषय में सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह छात्रों को महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने, ऐतिहासिक अध्ययन को वास्तविक जीवन के संदर्भों से जोड़ने, और विषय के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने में मदद करता है। यहाँ इतिहास में डिज़र्टेशन कार्य के महत्व को विस्तार से समझाया गया है:

1. सक्रिय शिक्षा और आलोचनात्मक सोच

- व्यावहारिक अनुभव: डिज़र्टेशन कार्य छात्रों को ऐतिहासिक अनुसंधान प्रक्रिया में संलग्न करता है, जिसमें स्रोतों का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना और साक्ष्यों की व्याख्या करना शामिल है।
- सर्व-स्वीकृत आख्यानों पर सवाल उठाना: छात्र स्थापित ऐतिहासिक दृष्टांतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना सीखते हैं, पक्षपात या पूर्वाग्रह की पहचान करते हैं, और यह समझते हैं कि किसकी आवाज़ इतिहास में प्रमुखता पा जाती है और कौन हाशिए पर रह जातेहैं।
- समस्या समाधान कौशल: वास्तविक ऐतिहासिक चुनौतियों पर विचार के दौरान छात्र समस्याओं का समाधान करना और साक्ष्य के आधार पर तार्किक निष्कर्ष निकालना सीखते हैं।

2. सिद्धांत को व्यावहारिकता से जोड़ना

- ऐतिहासिक विधियों का उपयोग: डिज़र्टेशन कार्य छात्रों को कक्षा में सीखे गए अवधारणाओं और सिद्धांतों, जैसे स्रोत विश्लेषण, इतिहासलेखन, और ऐतिहासिक ढांचों को व्यावहारिक अनुसंधान में लागू करने में मदद करता है।

- इतिहास की प्रासंगिकता समझना: स्थानीय इतिहासों या विशिष्ट विषयों के साथ जुड़कर छात्र यह समझते हैं कि ऐतिहासिक घटनाएँ और प्रक्रियाएँ समकालीन मुद्दों और पहचान को कैसे प्रभावित करती हैं।

3. अनुसंधान कौशल का विकास

- मूल स्रोतों से जुड़ाव: छात्र अभिलेखागार, मौखिक इतिहास, और अन्य प्राथमिक स्रोतों के साथ काम करना सीखते हैं, जिससे उनकी अनुसंधान क्षमताओं में सुधार होता है।
- कार्यप्रणाली में प्रशिक्षण: डिज़र्टेशन कार्य छात्रों को ऐतिहासिक तरीकों जैसे तुलना, कालक्रम, और सन्दर्भीकरण/सामान्यीकरण में प्रशिक्षित करता है।
- डिजिटल साक्षरता: आधुनिक डिज़र्टेशनों में GIS मैपिंग, डेटाबेस, और मल्टीमीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग शामिल होता है, जिससे छात्र डिजिटल युग के लिए प्रासंगिक कौशल प्राप्त करते हैं।

4. संचार कौशल को बढ़ावा देना

- प्रस्तुति और लेखन: चाहे निबंधों, प्रदर्शनियों, या मल्टीमीडिया आउटपुट के माध्यम से, छात्र जटिल विचारों को स्पष्ट और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करना सीखते हैं।
- सहयोगात्मक कार्य: समूह डिज़र्टेशन टीमवर्क और संचार कौशल को बढ़ावा देती हैं क्योंकि छात्र सामूहिक अनुसंधान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं।
- सामुदायिक जुड़ाव: जब डिज़र्टेशन स्थानीय इतिहास या सार्वजनिक इतिहास पहलों से जुड़ी होती हैं, तो छात्र गैर-शैक्षणिक दर्शकों के साथ अपने ऐतिहासिक निष्कर्षों को साझा करना सीखते हैं।

5. सहानुभूति और समावेशिता विकसित करना

- विविध दृष्टिकोणों को समझना: डिज़र्टेशन छात्रों को हाशिए पर पड़े समूहों के इतिहासों का पता लगाने का अवसर देती हैं, जिससे वे विविध अनुभवों को गहराई से समझते हैं।
- रुढ़ियों को तोड़ना: ऐतिहासिक संदर्भों की जटिलताओं का अध्ययन करके, छात्र इतिहास के सरलीकरण को चुनौती देते हैं और मानव इतिहास का एक अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोण विकसित करते हैं।

6. रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करना

- रचनात्मक प्रस्तुतियाँ: इतिहास डिज़र्टेशन अक्सर अभिनव प्रस्तुतियों, जैसे डॉक्यूमेंट्री, डिजिटल कहानी कहने, या संग्रहालय प्रदर्शनियों को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है।
- अंतर्विषयक संबंध: छात्र अपने ऐतिहासिक विश्लेषण को समृद्ध करने के लिए समाजशास्त्र, भूगोल, या कला जैसे अन्य विषयों के दृष्टिकोणों को शामिल कर सकते हैं।

7. भविष्य के करियर के लिए तैयारी करना

- कौशल विकास: अनुसंधान, आलोचनात्मक सोच, संचार, और डिजिटल साक्षरता के कौशल जो इतिहास-डिज़र्टेशनों के माध्यम से विकसित होते हैं, अकादमिक, पत्रकारिता, सार्वजनिक नीति, विरासत प्रबंधन, और अन्य क्षेत्रों में करियर के लिए मूल्यवान हैं।
- पोर्टफोलियो निर्माण: डिज़र्टेशन कार्य ठोस आउटपुट तैयार करता है, जिसे छात्र नौकरियों, छात्रवृत्तियों, या स्नातक कार्यक्रमों के लिए आवेदन में प्रस्तुत कर सकते हैं।

8. इतिहास को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाना

- स्थानीय इतिहासों के साथ जुड़ाव: स्थानीय या पड़ोस के इतिहासों को शामिल करने वाली डिज़र्टेशन अतीत के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बनाती हैं, जिससे इतिहास अधिक अर्थपूर्ण बनता है।
- भूतकाल और वर्तमान को जोड़ना: छात्र यह समझने में सक्षम होते हैं कि ऐतिहासिक घटनाएँ वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक संदर्भों को कैसे आकार देती हैं।

मुख्य अवधारणाएँ

1. सूक्ष्म इतिहास (Microhistory):
   - छोटे पैमाने पर ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करने पर जोर देना ताकि व्यापक ऐतिहासिक संदर्भों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सके।

2. सार्वजनिक इतिहास (Public History):

- यह पता लगाना कि संग्रहालयों, स्मारकों, और सामुदायिक शोध कार्य के माध्यम से इतिहास को आम जनता तक कैसे पहुँचाया जाता है।

3. स्मृति और पहचान (Memory and Identity):

- यह जांचना कि सामूहिक स्मृति स्थानीय पहचान को कैसे आकार देती है और समय के साथ इन स्मृतियों को कैसे संरक्षित किया जाता है, चुनौती दी जाती है या मिटा दिया जाता है।

4. सत्ता और प्रतिनिधित्व (Power and Representation):

- यह विश्लेषण करना कि ऐतिहासिक कथाओं में किसकी(समुदाय, वर्ग, व्यक्ति, लिंग, इत्यादि) आवाज़को विशेषाधिकार मिलता है और कैसे उपेक्षित दृष्टिकोणों को पुनः प्राप्त किया जा सकता है या इतिहास की चुप्पियों को तोड़ने के लिए क्या प्रयास किए जा सकते हैं।

5. इतिहास लेखन दृष्टिकोण (Historiographical Approaches):

- छात्रों को विभिन्न ऐतिहासिक पद्धतियों, जैसे कि पोज़िटिविस्ट, नारीवादी, उत्तर-औपनिवेशिक, या उपयुक्त दृष्टिकोणों की आलोचना और तुलना करने के लिए प्रोत्साहित करना।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

आमतौर पर ऐसे विषय का चयन किया जाता है,जिस पर पूर्व में अधिक अध्ययन न किया गया हो अथवा ऐसी समस्या का चुनाव करें जिस पर पूर्व में अध्ययन तो हुआ हो परन्तु उस विषय में शोध का उद्देश्य भिन्न हो अथवा समस्या का स्वरूप परिवर्तित हो।

शोध प्रबन्ध प्रस्ताव /डिज़र्टेशन कार्य कब प्रारम्भ किया जाएगा

(When Dissertation/Dissertation will begin)

- अपनी रूचि के शोध विषय (Research Topic) का चयन करें।
- अपने शैक्षिक फैसिलिटेटर से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।
- फैसिलिटेटर से संस्तुति प्राप्त करें।
- अध्ययन करना।(Conducting the Study)
- प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने पर्यवेक्षक से समय-समय पर सलाह एवं मार्गदर्शन प्राप्त करें।

विषय/शीर्षक का चुनाव एवं फैसिलिटेटर की सहमति प्राप्त करना

(Selection of Topic and Facilitator's consent)

किसी भी शोध को करने का प्रथम सोपान विषय का चयन होता है। अपनी रूचि के विषय को चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को ध्यान में रखें। ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें।इसके अतिरिक्त विषय की उपयुक्तता,प्रासंगिकता,विषय से संबधित अध्ययन सामग्री,समय सीमा एवं व्यय आदि बातों का ध्यान रखें।तथ्यों के संग्रहण हेतु स्थान का चयन भी विशेष महत्व रखता है जिससे आपकी समय एवं धन का अपव्यय न हो।आप अपनी सुविधानुसार राज्य,जिला एवं क्षेत्र का चयन कर सकते है।

शोध से सम्बन्धित विषय

(Topics related to Research)

किसी भी शोध कार्य को करने की प्रथम सीढ़ी विषय चयन की होती है अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि अपनी रूचि का विषय चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का भी ध्यान रखें ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त आपको विषय की उपयुक्तता,प्रासंगिकता,विषय की अध्ययन सामग्री,समय सीमा के साथ-साथ शोध कार्य में व्यय होने वाली धनराशि पर भी ध्यान देना चाहिए।

इतिहास-डिज़र्टेशन के लिए सही विषय चुनना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आपके शोध की दिशा, गहराई और आपकी रुचि को निर्धारित करता है। यहां एक प्रभावी और आकर्षक विषय चुनने के लिए चरण और सुझाव दिए गए हैं:

1. अपनी डिज़र्टेशन की सीमा और उद्देश्य को समझें

- पाठ्यक्रम आवश्यकताएँ: सुनिश्चित करें कि आपका विषय पाठ्यक्रम या डिज़र्टेशन दिशानिर्देशों के अनुरूप हो। देखें कि क्या कोई विशिष्ट विषय, समय अवधि, या भौगोलिक क्षेत्र शामिल है।
- डिज़र्टेशन का उद्देश्य: यह पहचानें कि डिज़र्टेशन का उद्देश्य स्थानीय इतिहास का पता लगाना, ऐतिहासिक बहसों का विश्लेषण करना, या इतिहासलेखन में विशिष्ट प्रश्नों को संबोधित करना है।

2. अपनी रुचियों पर विचार करें

- व्यक्तिगत जिज्ञासा: ऐसा विषय चुनें जिसमें आप वास्तव में रुचि रखते हों। एक ऐसा विषय जिसे आप आकर्षक पाते हैं, वह आपको शोध प्रक्रिया के दौरान प्रेरित रखेगा।
- समसामयिक घटनाओं से जुड़ाव: ऐसे ऐतिहासिक विषयों का पता लगाएं जो वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, या सांस्कृतिक मुद्दों से जुड़े हों, ताकि इतिहास की प्रासंगिकता स्पष्ट हो सके।
- स्थानीय जुड़ाव: अपने स्थानीय या पड़ोस के इतिहास से संबंधित विषयों की जाँच करें, क्योंकि वे अक्सर अधिक सुलभ और व्यक्तिगत रूप से आकर्षक होते हैं।

3. एक शोध प्रश्न तैयार करें

- सामान्य से शुरुआत करें, फिर इसका दायरा सुनिश्चित करें: रुचि के एक सामान्य क्षेत्र (जैसे, महिलाओं के अधिकार आंदोलन) से शुरुआत करें और इसे एक विशिष्ट शोध प्रश्न में बदलें (जैसे, "द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी ने [भारत] में नारीवादी आंदोलन को कैसे प्रभावित किया?")।
- विशिष्ट और केंद्रित रहें: एक स्पष्ट और परिभाषित प्रश्न आपके शोध को संरचित करने में मदद करता है और जानकारी के अधिक भार से बचाता है।
- संभव होने पर ध्यान दें: ऐसा प्रश्न चुनें जिसे उपलब्ध समय, संसाधनों और शब्द सीमा के भीतर संबोधित किया जा सके।

4. उपलब्ध स्रोतों का पता लगाएँ

- प्राथमिक स्रोत: प्राथमिक स्रोत जैसे अभिलेखागार, समाचार पत्र, मौखिक इतिहास, या पुरावशेषों की उपलब्धता पर ध्यान दें।
- माध्यमिक स्रोत: सुनिश्चित करें कि पृष्ठभूमि जानकारी और विश्लेषण के लिए पर्याप्त विद्वतापूर्ण कार्य उपलब्ध हैं।
- स्थानीय संसाधन: स्थानीय पुस्तकालयों, संग्रहालयों और ऐतिहासिक समाजों का उपयोग करें ताकि अपने विषय से संबंधित अनूठी सामग्री प्राप्त की जा सके।

5. विषय के महत्व पर विचार करें

- मौलिकता: एक अनूठा दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करें या एक ऐसा विषय चुनें जिसे बहुत अधिक अध्ययन नहीं किया गया है।
- प्रासंगिकता: ऐसा विषय चुनें जिसके व्यापक प्रभाव हों या जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बहसों या रुझानों से संबंधित हो।
- प्रभाव: यह सोचें कि आपकी डिज़र्टेशन किसी ऐतिहासिक अवधि, घटना, या समुदाय की समझ में कैसे योगदान दे सकती है।

6. शिक्षकों और सहपाठियों से चर्चा करें

- मार्गदर्शन प्राप्त करें: अपने विचारों को शिक्षकों, सलाहकारों, या सहपाठियों के साथ साझा करें ताकि विषय को परिष्कृत किया जा सके।
- सहयोगात्मक इनपुट: सहपाठियों के साथ चर्चा से नए विचार प्राप्त हो सकते हैं या आपके चुने हुए विषय में संभावित चुनौतियों की पहचान हो सकती है।

7. व्यवहार्यता का मूल्यांकन करें

- समय और संसाधन: विचार करें कि डिज़र्टेशन को पूरा करने के लिए आपके पास कितना समय है और क्या आप आवश्यक संसाधनों तक पहुँच सकते हैं।
- व्यावहारिक चुनौतियाँ: बहुत व्यापक या जटिल विषयों से बचें जिन्हें पूरी तरह से शोध करना कठिन हो।

8. एक ऐसा विषय चुनें जो आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करे

- बहस और विवाद: ऐसे विषयों का चयन करें जो ऐतिहासिक बहसों या विपरीत दृष्टिकोणों को शामिल करते हों (जैसे, क्रांति के कारण या किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व की व्याख्या)।
- अंतर-संबंधित विषय: यह विचार करें कि कैसे विभिन्न विषय, जैसे लिंग, वर्ग, जाति, या प्रौद्योगिकी, ऐतिहासिक ढांचे के भीतर एक-दूसरे से जुड़े हैं।

थीम के आधार पर विषयों के कुछ उदाहरण:

स्थानीय इतिहास

- किसी स्थानीय उद्योग या व्यापार का इतिहास।
- आपके शहर या कस्बे में शहरी स्थानों का विकास।
- दशकों में आपके पड़ोस में सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन।
- स्थानीय क़िले, मंदिर, देवता, राजा या रीति का इतिहास।
- अपने क्षेत्र के किसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का विस्तृत परिचय ।
- स्थानीय जल- संग्रहण व्यवस्था ।
- स्थानीय वास्तुशिल्प जैसे भवन निर्माण शैली।

सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास

- इतिहास को संरक्षित करने में लोक-कथाओं और मौखिक परंपराओं की भूमिका।
- एक विशिष्ट ऐतिहासिक अवधि के दौरान सिनेमा या साहित्य का प्रभाव।
- किसी क्षेत्र में खाद्य संस्कृति का विकास।
- किसी स्थानीय मेले का इतिहास
- किसी स्थानीय मंदिर का वास्तुशिल्पीय अध्ययन

राजनीतिक और आर्थिक इतिहास

- उपनिवेशवाद का व्यापार और उद्योग पर प्रभाव।
- राजनीतिक आंदोलनों की आधुनिक राष्ट्रों को आकार देने में भूमिका।
- महान मंदी जैसी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवधियों के दौरान आर्थिक नीतियाँ।

वैश्विक संबंध

- विभिन्न देशों में स्वतंत्रता आंदोलनों का तुलनात्मक अध्ययन।
- प्रथम या द्वितीय विश्व युद्ध में महिलाओं की भूमिका।
- महामारी का इतिहास और उनके समाज पर प्रभाव।

अन्य सुझाव

- लचीला रुख़ रखें: जैसे-जैसे आप शोध में गहराई से जाएँ और नई जानकारी प्राप्त करें, अपने विषय को समायोजित करने के लिए तैयार रहें।
- रुचि और व्यवहारिकता का संतुलन: जबकि किसी विषय के प्रति उत्साह महत्वपूर्ण है, यह सुनिश्चित करें कि यह प्रबंधनीय है और अध्ययन के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं।
- ग्रेड से परे सोचें: ऐसा विषय चुनें जो न केवल अकादमिक आवश्यकताओं को पूरा करे बल्कि आपके व्यक्तिगत विकास और इतिहास की समझ में योगदान दे।

इन चरणों का पालन करके, आप एक ऐसा इतिहास डिज़र्टेशन विषय चुन सकते हैं जो आकर्षक, प्रभावशाली और शैक्षणिक रूप से लाभदायक हो।

डिज़र्टेशन प्रस्ताव
(Research Dissertation Proposal)

आपका प्रबन्ध प्रस्ताव 8-10 पन्नों का होना चाहिये। यह प्रत्ययात्मक रूपरेखा (Conceptual framework) का होना चाहिये। जो समस्या की प्रकृति को दर्शाते हुये होना चाहिये।जिसमें समस्या का चयन उद्देश्य,उपकल्पना,समग्र एवं विनिदर्शन का विवरण होना चाहिए।आंकड़ा-संग्रह की विधियाँ,सारणीयन एवं अध्यायीकरण को सम्मिलित किया जाना चाहिये। समाज वैज्ञानिक होने के नाते आप से अपेक्षा की जाती है कि आप सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों का प्रयोग करते हुये नये ज्ञान की खोज एवं पुराने ज्ञान के सत्यापन का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

डिज़र्टेशन प्रस्ताव लिखने हेतु प्रारूप

(Proposal format to write dissertations)

- शीर्षक का चुनाव

  (Selection of Topic) - सर्वप्रथम डिज़र्टेशन प्रस्ताव बनाने हेतु एक शोध शीर्षक का चुनाव करना चाहिए

• परिकल्पना का निर्माण

Formation of Hypothesis –शोध डिज़र्टेशन हेतु समस्या के आधार पर परिकल्पना / प्रकल्पना का निर्माण करना चाहिए। जैसे : "भारत में स्थानीय देवताओं की पूजा प्रथाओं ने पवित्र स्थलों और पर्यावरण संरक्षण के नियमों की स्थापना करके ऐतिहासिक रूप से जंगलों, जल स्रोतों और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान दिया है।"

• अध्ययन की उपयुक्तता– अध्ययन का शीर्षक **क्यों**चुना गया तथा इसकी उपयोगिता क्या है के बारे में स्पष्ट ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए।

- अध्ययन के उद्देश्य

Objectives of the Study - अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए।कि उक्त अध्ययन को किये जाने के पीछ आपका उद्देश्य क्या है तथा आप इस अध्ययन को किन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु करना चाहते है।

- अध्ययन हेतु प्रयोग प्रविधि

Methodology for Study - प्रस्तुत शोध अध्ययन में कौन-कौन सी शोध प्रविधियों का प्रयोग करेगें। यहाँ पर आपको उन प्रयोग की जाने वाली विधियों का स्पष्ट एंव विस्तार से वर्णन करना होगा।

- शोध अभिकल्पना

Research Design – शोध प्रविधि में कौन सी शोध प्रारचना का प्रयोग करेगें। जो आपके शोध कार्य की प्रकृति एंव उददेश्यों को फलीभूत करेगें उसके बारे में चर्चा करना चाहिए एवं परिभाषा देनी चाहिए।

- तथ्य एकत्रित करने की तकनीक

Techniques of Data Collection - शोध अध्ययन में तथ्य एकत्रित करने हेतु दो विधियों का प्रयोग करते हैं।

प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने की विधि

Primary methods of data collection - प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने हेतु कई विधियों का प्रयोग करते हैं। जिनमें कुछ अग्रलिखित है -

1. अवलोकन

2. संग्रहालय

3. अभिलेखागार

4. प्रश्नावली

5. अनुसूची

6. साक्षात्कार

7. वैयक्तिक अध्ययन

द्वितीयक तथ्य एकत्रित करने की विधि

Method's of Secondary data collection:द्वितीयक तथ्य वे तथ्य होते है जो विभिन्न किताबों,पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इत्यादि के माध्यम से एकत्रित किये जाते है इनका स्पष्ट निरूपण होना चाहिए।

- सारिणीकरण,तथ्य विश्लेषण व्याख्या एवं प्रतिवेदन

  Tabulation, interpretation and Report Writing - शोध प्रबन्ध प्रस्ताव में स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए कि शोध अध्ययन में किस प्रकार की सारिणी का प्रयोग करेगें तथ्यों का कैसे विश्लेषण करेगें उनकी व्याख्या कैसे करेगें तथा उनका प्रतिवेदन करेगें।

- शोध अध्ययन का अध्यायीकरण

  Chapterisation of research Study - इस शीर्षक के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध में कौन-कौन से अध्याय होगें तथा उन अध्यायों में कौन-कौन से तथ्य होगें का वर्णन करना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त शीर्षकों के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर पर्यवेक्षक को प्रस्तुत करना चाहिए तथा पर्यवेक्षक के अनुमोदन के पश्चात अपना शोध कार्य शुरू करना चाहिए।

<u>शोध प्रबन्ध हेतु प्रारूप</u>

<u>Outline of Research Project</u>

शोध प्रबन्ध लिखने के लिए सबसे पहले आवश्यक होता है कि अध्यायीकरण के अनुसार प्रतिवेदन किया जाए। इस प्रकार शोध प्रबन्ध तैयार करने हेतु अग्रलिखित शीर्षक दिये जा रहे है-

प्रस्तावना

UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

Introduction - इसमें शोध अध्ययन शीर्षक से सम्बन्धित तथ्यों को विस्तृत रूप से लिखना चाहिए तथा जो साहित्य जहां से लिये गये है उनका भी सन्दर्भ सूची में वर्णन करना चाहिए।

शोध अध्ययन की उपयुक्तता व उद्देश्य

Objectives and relevance of research study - इसमें शोध अध्ययन की उपयुक्तता तथा उद्देश्यों का स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए।

साहित्य का पुनरावलोकन

Review of literature – शोध अध्ययन का प्रतिवेदन करने में साहित्य पुनरावलोकन का महत्वपूर्ण स्थान है अतः शोध अध्ययन प्रतिवेदन में पूर्व में हुए अध्ययनों का वर्णन सांख्यिकीय तथ्यों के साथ करना चाहिए।

ऐतिहासिक स्रोतों की प्रामाणिकता, सत्यापन, तिथिक्रम, वर्तमान संदर्भ

Authenticity, Verification, Chronology, and Current Context of Historical Sources: इतिहास का अध्ययन करते समय, यह आवश्यक है कि हम स्रोतों का मूल्यांकन विभिन्न स्तरों पर करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे शोध के लिए विश्वसनीय और सटीक आधार प्रदान करते हैं। चार मुख्य पहलू जिन पर ध्यान देना आवश्यक है, वे हैं: प्रामाणिकता, सत्यापन, कालक्रम, और उनका वर्तमान संदर्भ।प्रामाणिकता का अर्थ है यह निर्धारित करना कि कोई ऐतिहासिक स्रोत वास्तविक है और नकली, बदला हुआ, या गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है। सत्यापन का मतलब स्रोत की सामग्री की सटीकता, विश्वसनीयता, और प्रामाणिकता का आकलन करना है।यह इतिहासकारों को तथ्यों और पूर्वाग्रहों, अतिशयोक्ति, या गलतियों के बीच अंतर करने में मदद करता है।यह सुनिश्चित करता है कि व्याख्याएँ साक्ष्यों पर आधारित हैं, न कि केवल धारणाओं पर।सत्यापन के तरीके हैं: पारस्परिक संदर्भ (Cross-Referencing): स्रोत को अन्य समकालीन स्रोतों से तुलना करें ताकि सुसंगतता सुनिश्चित की जा सके; लेखक का उद्देश्य (Authorial Intent): यह समझें कि लेखक का उद्देश्य और संभावित पूर्वाग्रह (जैसे, प्रचार, व्यक्तिगत उद्देश्य) क्या हो सकता है; तथ्य-जांच (Fact-Checking): स्रोत में किए गए दावों की पुष्टि स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों या घटनाओं से करें; संदर्भ विश्लेषण (Contextual Analysis): यह मूल्यांकन करें कि स्रोत किस सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक स्थिति में बनाया गया था।

शोध प्रविधि

Research method - शोध अध्ययन प्रतिवेदन में विस्तृत रूप से शोध प्रविधि का वर्णन करना चाहिए। जिसमें शोध प्रारचना शोध निदर्शन तथा तथ्यों के एकत्रीकरण के बारे में भी वर्णन करना चाहिए।

अभिलेखीय अनुसंधान:

- शिक्षार्थियों को स्थानीय अभिलेखागार, पुस्तकालयों, और संग्रहालयों में ऐतिहासिक रिकॉर्ड जैसे जनगणना डेटा, नगर निगम के रिकॉर्ड, समाचार पत्र, और व्यक्तिगत पत्राचार का पता लगाना चाहिए।
- प्राथमिक स्रोतों के विश्लेषण और व्याख्या में शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित होने के साथ ही, उनके संदर्भ, उद्देश्य, और सीमाओं को समझना चाहिए।

मौखिक इतिहास:

- शिक्षार्थियों को मौखिक साक्षात्कार तकनीकों में प्रशिक्षित होना चाहिए, जिसमें प्रश्न तैयार करना, रिकॉर्डिंग करना, और लिप्यंतरण शामिल है।
- हाशिए पर पड़े या अलिखित समूहों के दृष्टिकोणों को पकड़ने में मौखिक इतिहास के महत्व पर जोर देना चाहिए।

क्षेत्र-कार्य और मानचित्रण:

- शिक्षार्थियों को स्थानीय स्थलों, पड़ोस, या सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा के लिए तैयारहोना चाहिए।
- अपनी टिप्पणियों को क्षेत्र नोट्स, रेखाचित्र, तस्वीरें, और GIS मानचित्रण उपकरणों के माध्यम से प्रलेखित करने का प्रयास करना चाहिए।

डिजिटल उपकरण और कहानी कहना:

- छात्रों को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जैसे StoryMap, ArcGIS, Canva, या वीडियो संपादन सॉफ़्टवेयर का उपयोग करना सीखना चाहिए।
- डिजिटल अभिलेखागार, पॉडकास्ट, या ऑनलाइन प्रदर्शनियों जैसे रचनात्मक आउटपुट को प्रोत्साहित करना चाहिए।

सामुदायिक सहयोग:

- स्थानीय ऐतिहासिक संगठनों, सांस्कृतिक समूहों, या निवासियों के साथ साझेदारी की सुविधा देना।
- सामुदायिक-आधारित अनुसंधान के नैतिक पहलुओं को उजागर करना, यह सुनिश्चित करते हुए कि सम्मान और लाभ पारस्परिक हो।

उत्तरदाताओं का पृष्ठभूमि

Profile of respondents -इस अध्याय में उत्तरदाताओं से सम्बन्धित उन सभी तथ्यों का वर्णन करना चाहिए जो उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित हो।

निष्कर्ष

Conclusion - इसके अन्तर्गत शोध अध्ययन में महत्वपूर्ण तथ्यों को दिया जाना चाहिए जिससे शोध अध्ययन की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जानी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography References -

शोध प्रबन्ध में जो भी तथ्य द्वितीयक स्रोतों से लिये जाते है उनका विवरण सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में देना चाहिए।

शिक्षार्थियों की सहायता हेतु यहॉ शोध से सम्बन्धित विभिन्न चरणों की व्याख्या की जा रही है।

आइए, एक ऐतिहासिक डिज़र्टेशनकार्य के विभिन्न चरणों को समझें:

1. विषय का चयन:

- रुचि: ऐसे विषय का चयन करें जिसमें आपकी वास्तविक रुचि हो। इससे आपको पूरे शोध प्रक्रिया में प्रेरित रहने में मदद मिलेगी।
- क्षेत्र: सुनिश्चित करें कि विषय दिए गए समय सीमा और संसाधनों के भीतर प्रबंधनीय है। बहुत व्यापक या संकीर्ण विषयों से बचें।
- स्रोत उपलब्धता: अपने विषय से संबंधित प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों की उपलब्धता पर विचार करें।
- शोध प्रश्न: एक स्पष्ट और केंद्रित शोध प्रश्न तैयार करें जिसका उत्तर आपकी डिज़र्टेशन देगी।

2. साहित्य समीक्षा:

- पृष्ठभूमि अनुसंधान: सामान्य पाठ्य और संदर्भ सामग्री के माध्यम से अपने विषय की बुनियादी समझ प्राप्त करें।
- मुख्य स्रोतों की पहचान: पुस्तकों, लेखों, दस्तावेजों और ऑनलाइन डेटाबेस जैसे प्रासंगिक प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का पता लगाएं।
- महत्वपूर्ण विश्लेषण: विश्वसनीयता, प्रासंगिकता और पूर्वाग्रह के लिए स्रोतों का मूल्यांकन करें।

- सूचना का संश्लेषण: विषय की एक सुसंगत समझ बनाने के लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी को व्यवस्थित और व्याख्या करें।

3. परिकल्पना का निर्माण (वैकल्पिक):

- शिक्षित अनुमान: आपके द्वारा अध्ययन किए जा रहे ऐतिहासिक घटना या घटना के बारे में एक अस्थायी व्याख्या या भविष्यवाणी विकसित करें।
- परीक्षण योग्य: सुनिश्चित करें कि आपकी परिकल्पना परीक्षण योग्य है और साक्ष्य द्वारा समर्थित या खंडित की जा सकती है।

4. शोध पद्धति:

- ऐतिहासिक विधि: स्रोत आलोचना, कालक्रम और संदर्भ विश्लेषण जैसी तकनीकों का उपयोग करें।
- डेटा संग्रह: प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्रासंगिक डेटा एकत्र करें।
- डेटा विश्लेषण: अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकालने के लिए एकत्रित डेटा की व्याख्या और विश्लेषण करें।

5. लेखन प्रक्रिया:

- सुनिश्चित स्वरूप: अपने पेपर को एक स्पष्ट परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष के साथ संरचित करें।
- तर्क: एक मजबूत थीसिस स्टेटमेंट विकसित करें और इसे अपने शोध के साक्ष्य के साथ समर्थन दें।
- उद्धरण: स्रोतों को श्रेय देने के लिए उचित उद्धरण शैलियों (जैसे APA, MLA, शिकागो) का उपयोग करें (वैकल्पिक)।
- स्पष्टता और सुसंगतता: स्पष्ट और संक्षिप्त लिखें, विचारों को सुचारू रूप से जोड़ने के लिए संक्रमण का उपयोग करें।

6. निष्कर्ष:

- निष्कर्षों का सारांश: अपनी थीसिस को दोहराएं और अपने तर्क के मुख्य बिंदुओं का सारांश दें।
- परिणामों की व्याख्या: अपने निष्कर्षों के महत्व की व्याख्या करें और बताएं कि वे ऐतिहासिक विषय की समझ में कैसे योगदान करते हैं।

- सीमाएँ और भविष्य के अनुसंधान: अपने शोध की किसी भी सीमा को स्वीकार करें और आगे की जांच के लिए संभावित क्षेत्रों का सुझाव दें।

अतिरिक्त बिंदु:

- समय प्रबंधन: अपने शोध और लेखन को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए एक यथार्थवादी समयरेखा बनाएं।
- नैतिक विचार: बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान करें और चोरी से बचें।
- पीयर रिव्यू: अपने काम को बेहतर बनाने के लिए साथियों या सलाहकारों से प्रतिक्रिया लें।
- संशोधन और संपादन: स्पष्टता, सुसंगतता और सटीकता के लिए अपने लेखन को परिष्कृत करते रहें।

इन चरणों का पालन करके और विवरण पर ध्यान देकर, आप एक उच्च-गुणवत्ता वाली ऐतिहासिक शोध डिज़र्टेशन तैयार कर सकते हैं।

डिज़र्टेशन कार्य के अपेक्षित परिणाम:

1. शैक्षणिक परिणाम:
   - छात्र ऐतिहासिक अनुसंधान विधियों और स्रोतों के आलोचनात्मक विश्लेषण में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करेंगे।
   - वे सूक्ष्म स्तर के अध्ययनों को बड़े ऐतिहासिक ढांचों से जोड़ने की क्षमता विकसित करेंगे।
2. सामुदायिक प्रभाव:
   - यह डिज़र्टेशन स्थानीय इतिहासों को संरक्षित और प्रसारित करने में योगदान करेगी, जो समुदायों के लिए एक मूल्यवान संसाधन बनेगी।
   - यह अकादमिक और स्थानीय समाजों के बीच संबंधों को मजबूत करेगी।
3. व्यक्तिगत विकास:
   - छात्र अपने परिवेश के प्रति एक गहराजुड़ाव महसूस कर सकें।
   - भविष्य में स्वयं को एक विचारवान और संवेदनशील व्यक्ति बना सकें।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

लघु शोध प्रबंध के कवर पेज का प्रारूप

डिज़र्टेशन का शीर्षक

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की

बैचलर ऑफ़ आर्ट्स

उपाधि हेतु

प्रस्तुत डिज़र्टेशन

शोधार्थी का नाम

पता

निर्देशक (Facilitator) का नाम एवं पता

नामांकन संख्या

तिथि एवं वर्ष

अध्ययन केंद्र का नाम एवं पता

Performa for Submission ofHistory Dissertation Proposal for Approval from Facilitator

Enrollment No:………………………………………

Title of the Dissertation:…………………………………

Date of Submission:…………………………………

Name of the Study Center:………………………….

Name of the Regional Center………………………

Name of the Facilitator :…………………………………

Signature…………. ………………………………….

Name & Address of the Facilitator:…………………….

…………………………………………………………….

……………………………………………………………

Phone No.& Mail Id:………………………………….

Name & Address of the Student……………………

…………………………………………………….....

……………………………………………………………

Phone No.& Mail Id :………………………………..

Approved /not approved (with remarks)…………………………………………………………

Date and Place:………………………………………

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

Declaration

I hereby declare that the dissertation entitled……………………………………………………….

………………………………………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………………………………….

(Write the title in Block Letters) Submitted for partialfulfilment of the BA- Vth semester to Uttarakhand Open University (UOU) is my original work and has not been submitted earlier to any other institution to fulfil the requirement for any other programme of study.I also declare that no chapter of this manuscript in whole or in part is lifted and incorporated in this report from any earlier work done by me or others.

Date :

Place :

Signature:………………………………..

Enrolment no……………………………..

Name :………………………………………

Address:…………………………………..

………………………………………………..

<u>Certificate</u>

This is to certify that Mr./Ms. ……………………………………………………................................A studentof BA Vth semester from Uttarakhand Open University (UOU)Haldwani was working under my supervision and guidance for his/her Dissertation for the course BA.His/Her Dissertation entitled……
………
……………

Which he /she is submitting, is his /her genuine and original work.

Signature:……………………………………………

Name:………………………………………………

Address:…………………………………………….

Phone no. & mail id…………………………….

(To be filled by Facilitator)

Date:

Place: